THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-01 | April-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i1.41

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा में अन्तर व समानता का विश्लेषण

अमिता शर्मा[1] एवं प्रो स्वीटी श्रीवास्तव[2]
[2]शोधार्थी,शिक्षाशास्त्र, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्याल, कानपुर(उ० प्र०)
[2]शोध निर्देशिका, शिक्षाशास्त्र विभाग, दयानन्द महिला प्रशिक्षण, महाविद्यालय, मैकरॉबर्ट गंज, कानपुर
Email: amitasharma.ed@gmail.com

सारांश

माध्यमिक शिक्षा वह शिक्षा है जो विश्वविद्यालय शिक्षा से पहले और प्राथमिक शिक्षा के बाद में दी जाती है। माध्यमिक स्तर पर शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी सामान्यतः किशोरावस्था के विद्यार्थी होते हैं जिसे तूफान तथा झंझावत की अवस्था कहा गया है। इस अवस्था में बालक एवं बालिकाओं की शारीरिक तथा मानसिक स्थिति मे ढेरों परिवर्तन होते हैं। वे समूह में रहना पसन्द करते हैं तथा वे स्वयं तथा दूसरों के बारे में कुछ धारणाएं भी बनाने लगते हैं जैसा कि पियाजे (1969) ने कहा है, तीव्र मानसिक विकास होने के कारण बालक वयस्क समाज में अपने आपको संगठित मानता है। वह एक नई मनोवृत्ति, संप्रत्यय तथा परिपक्वता का विकास करता है। इस दिशा में सकारात्मक विकास के लिए शिक्षकों की अहम् भूमिका होती है। शिक्षक वर्ग उन्हें उचित दिशा–निर्देश प्रदान कर एक परिपक्व सोच तथा मनोवृत्ति कायम करने में मदद करते हैं। जो किशोरों के एक स्वस्थ समायोजन में काफी सहायक सिद्व होते हैं। वर्तमान अध्ययन का ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा में अन्तर व समानता का विश्लेषण करना था। अध्ययन के लिए उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त 5 विद्यालयों से 100 छात्रों एवं 100 छात्राओं को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया। अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट होता है कि छात्रों का शैक्षिक स्तर औसत से कम तथा छात्राओं का औसत पाया गया। छात्राओं का शैक्षिक स्तर छात्रों से उत्तम पाया गया। छात्राओं एवं छात्रों का शैक्षिक स्तर क्रमशः औसत एवं औसत से उच्च पाया गया परन्तु दोनों समूहों में इस चर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

प्रस्तावना

प्रत्येक समाज के कुछ मूल्य व मान्यतायें होती है जिन्हें व्यक्ति सुरक्षित रखना चाहता है और अपनी आगामी पीढ़ी को हस्तान्तरित करना चाहता है। शिक्षा ही वह साधन है जिसका प्रयोग करके समाज अपनी संस्कृति व सभ्यता का संरक्षण व हस्तांतरण करता है। शिक्षा मनुष्य को सुसंस्कृत बनाती है तथा संवेदनशीलता व दृष्टि को प्रखर व प्रशस्त करती है। शिक्षा हमारे मौलिक व आध्यात्मिक विकास का एक आवश्यक साधन है। यही कारण है कि मानव इतिहास के आदिकाल से ही शिक्षा अपनी पहुँच व आवरण को बनाती रही है। शिक्षा ही वह सीढ़ी है जिस पर चढ़कर व्यक्ति अपने आर्थिक, सामाजिक आदि स्तरों को ऊँचा बना सकता है। समाज की शक्ति का आधार भी शिक्षा है। शिक्षा मानव सिद्धान्तों

की प्राप्ति का एक साधन भी है। समाज में रहकर व्यक्ति जो कुछ सीखता है उसी के कारण वह स्वयं को पाश्विक प्रवृत्तियों से ऊँचा उठाता है। शिक्षा विद्यालय की चारदीवारी तक ही सीमित न होकर जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है और जीवन के प्रत्येक अनुभव से उसके ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है।

कोठारी आयोग (1964–66) ''भारत के भाग्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है। हमारे स्कूल व कॉलेज से निकलने वाले विद्यार्थियों की योग्यता कार्य की सफलता पर निर्भर करती है। शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य हमारे रहन–सहन के स्तर को ऊँचा उठाना है।''

शिक्षा एक सतत् प्रक्रिया हैं इस प्रक्रिया का संचालन विद्यालय में किया जाता है। विद्यालय को समाज का लघु रूप माना जाता है क्योंकि विद्यालय में विभिन्न धर्म, जाति, वर्ग तथा समुदाय के बालक एक साथ शिक्षा ग्रहण कर अपना विकास करते हैं। इस प्रकार विद्यालय वे संस्थाए हैं जिन्हें सभ्य मनुष्य के द्वारा इस उद्देश्य से स्थापित किया जाता है कि समाज में सुव्यवस्थित तथा योग्य सदस्यता के लिए बालकों की तैयारी में सहायता मिले। विद्यालय में भिन्न–भिन्न धर्म, लिंग एवं सामाजिक वर्ग के छात्रा शिक्षा ग्रहण करते हैं। यूँ तो विद्यालय में पढ़ने वाले सभी विद्यार्थी समान दिखाई देते हैं किन्तु सूक्ष्म रूप से प्रत्येक विद्यार्थी एक दूसरे से अवयव व अनुभूति दोनों दृष्टि से सर्वथा भिन्न हैं और उनकी उपलब्धि प्रेरणा स्तर भी भिन्न होते हैं जो उनमें मौलिकता एवं नवीनता की भावना को जन्म देते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की उपलब्धि प्रेरणा स्तर विशिष्ट होता है जो उसे स्वयं का आकलन करने में सहायक होता है जिसके फलस्वरूप वह भविष्य के लिए विभिन्न योजनाओं व उद्देश्यों को स्वरूप प्रदान करता है। प्रारम्भ में वह कभी–कभी काल्पनिक स्तर के होते हैं लेकिन मानसिक विकास के साथ–साथ वह इनमें परिवर्तन करता है और धीरे–धीरे वास्तविकता के धरातल पर अपनी योजनाओं व उद्देश्यों को निरूपित करता है। उद्देश्यों का निर्धारण करने के बाद वह अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रेरणा रखता है और उन्हें प्राप्त करने के लिए कार्य करता है। प्रत्येक व्यक्ति की उद्देश्य प्राप्ति की तीव्रता अलग–अलग होती है तथा व्यक्ति को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उपलब्धि प्रेरणा स्तर आधार प्रदान करते हैं चूंकि उपलब्धि प्रेरणा स्तर व्यक्ति केंद्रित पक्ष होता है इसलिए व्यक्ति अपनी उपलब्धि प्रेरणा व अभिप्रेरणा स्तरों को अपनी क्षमता के अनुसार तय करता है। कभी–कभी वह इतने ऊँचे प्रेरक स्तर निर्धारित कर लेता है कि उन्हें प्राप्त करने में असफल भी हो सकता है। इस प्रकार शिक्षा ही वह साधन है जिसके माध्यम से हम विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर को ऊँचा उठा सकते हैं। इस तरह से शिक्षा व्यक्ति का सन्तुलित तथा सर्वांगीण विकास करती है। व्यक्ति की आन्तरिक शक्तियों का विकास करती है, उन्हें भविष्य के लिए तैयार करती है तथा उन्हें आत्म निर्भर बनाती है।

''उपलब्धि अभिप्रेरणा की अवधारणा ''सफलता एवं असफलता'' पर निर्भर करती है। शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा विद्यार्थियों में व्यक्तित्व की महत्पूर्ण विशेषताओं में से एक है, यह विद्यार्थियों के विचारों, भावनाओं, संवेदनाओं एवं मूल प्रवृत्तियों से संबंधित होती है। शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य होता है कि विद्यार्थियों को उनकी उपलब्धि से अभिप्रेरित करना जिसमें विद्यालय का शैक्षिक वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा धनात्मक रूप से विद्यालय के शैक्षिक वातावरण से प्रभावित होती है।''

''सामान्य जीवन में हम बहुधा यह कहते या सुनते रहते हैं कि यह विद्यार्थी कला में निपुण है या विज्ञान के अध्ययन में अधिक रुचि रखता है इस प्रकार हम वर्तमान योग्यता को आधार मानते हुए यह भी कहते हैं कि भविष्य में यह विद्यार्थी क्या होगा? सामान्य भाषा में इसे 'विशिष्ट योग्यता' या ईश्वरीय वरदान की संज्ञा दी जाती है परन्तु मनोवैज्ञानिक भाषा में इसे उपलब्धि अभिप्रेरणा कहते हैं।''

©The Research Dialogue | Received: 01 April 2026 | Accepted: 05 April 2026 | Published: 15 April 2026

विद्यार्थियों की महत्वाकांक्षा, उपलब्धि अभिप्रेरणा के स्तर पर सफलता काफी सीमा तक निर्भर करती है। यह बात आवश्यक है कि उचित सफलता के लिए महत्वाकांक्षा और उपलब्धि अभिप्रेरणा के स्तर का न तो अपनी सामर्थ्य और शक्तियों से बहुत अधिक होना अच्छा सिद्ध हो सकता है और न बहुत कम होना। विद्यार्थियों के अच्छे परिणामों की प्राप्ति उपलब्धि अभिप्रेरणा के उचित तथा अनुचित स्तर पर बहुत कुछ निर्भर करती है।

''उपलब्धि अभिप्रेरणा को कई मनोवैज्ञानिकों ने समझाने की कोशिश की आखिरकार उपलब्धि अभिप्रेरणा क्या है? इससे छात्रों को क्या लाभ मिलेगा? मनोवैज्ञानिक –ए.एल्डरमैन (1999), मर्फी (1996), साइमन (1988), एटकिंसन (1974), ट्रेसी (1993), एटकिंसन और फेदर (1966), कीफ और जेनकींस (1993), पार्कर और जॉनसन (1998), और मैक्लेन्ड (1961), एटकिंसन (1968), डेविड इलियट (1996) आदि। सभी मनोवैज्ञानिक ने यही बताने का प्रयत्न किया है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा छात्रों को सफलता से विफलता की ओर ले जाती है और विफलता से सफलता की ओर। उपलब्धि अभिप्रेरणा एक विद्यार्थी से दूसरे विद्यार्थी की अलग–अलग होती है कुछ विद्यार्थियों को प्रेरणा आंतरिक रुप से मिलती है तथा कुछ को बाहरी रुप में मिलती है। प्रत्येक विद्यार्थी उपलब्धि अभिप्रेरणा से ही अपने लक्ष्य तक पहुँचता है। यदि विद्यार्थी अपने लक्ष्य तक पहुँचने में कई बार असफल होते हैं किन्तु वह असफलता को ही अपनी सफलता मानकर आगे बढ़ते हैं वह अपना लक्ष्य आसानी से प्राप्त कर लेते हैं परन्तु जो विद्यार्थी असफलता के डर से कार्य नहीं करता है वह अपना लक्ष्य प्राप्त करने में असमर्थ हो सकते हैं।''

विद्यार्थियों के कार्यों के पीछे या सफल होने के पीछे अभिप्रेरणा एक ताकत है प्रेरणा के कई अलग–अलग प्रकार है हर किसी को अलग–अलग तरीके से प्रेरित किया जाता है। प्रेरणा सकारात्मक एवं नकारात्मक दो प्रकार की होती है।

आंतरिक प्रेरणा (Intrinsic Motivation) इस मूलभूत अभिप्रेरणा, प्राकृतिक अभिप्रेरणा या सकारात्मक अभिप्रेरणा कहते हैं। इसमें बालक अपनी स्वयं की इच्छाओं से कार्य करता है, यह व्यक्तिगत होती है जिसके अन्तर्गत जन्मजात गुण जैसे –भूख, प्यास, नींद, सेक्स आदि आते हैं।

बाह्य प्रेरणा (Extrinsic Motivation) इसे गौण अभिप्रेरणा, अप्राकृतिक अभिप्रेरणा, या ऋणात्मक अभिप्रेरणा भी कहते है। इसमें बालक किसी कार्य को अपनी स्वयं की इच्छा से न करके, किसी दूसरे की इच्छा से करता है यह एक सामाजिक अभिप्रेरणा होती है, जिसको विद्यार्थी स्वयं अर्जित करता है जैसे–सुरक्षा, प्रदर्शन, कला, ज्ञान के प्रति रुचि आदि।

''अभिप्रेरणा आरंभ से लेकर अंत तक सभी मानव क्रियाओं का स्रोत है जो प्रत्येक कारक को अपने में सम्मिलित करती है, अर्थात इसमें सम्मिलित है– प्रवृति, पक्षपात, इच्छा, पुरस्कार, आशा, रुचि, प्रतिज्ञा, चाह, आकांक्षा तथा लक्ष्य।''

''अभिप्रेरणा अर्जित प्रयास होता है यह कल्पना को हवा देता है, हृदय को भावना देता है, यह दृढ़ प्रतिज्ञा, आकांक्षा तथा उद्देश्य के द्वार खोलता है। यह बालकों को उस इच्छा को पाने के लिए प्रोत्साहित करता है; जो वह उपलब्धि प्राप्त करने के लिए तथा कठिनाइयों पर पार पाने के लिये करता है।''

''अभिप्रेरणा विद्यार्थी की वह आंतरिक स्थिति है, जो प्राणी में क्रियाशीलता उत्पन्न करती और लक्ष्य प्राप्ति तक चलती रहती है।'' इस प्रकार अभिप्रेरणा एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है जैसे –किसी विद्यार्थी की अभिप्रेरणा को आन्तरिक रूप से विकसित किया जा सकता है, क्योंकि किसी भी विद्यार्थी को खींचकर हम ला तो सकते हैं, लेकिन उसे ज्ञान प्राप्ति के लिए बाध्य या मजबूर नहीं कर सकते हैं, इसीलिये **थामसन** ने अध्यापक का सबसे पहला कार्य विद्यार्थी में रुचि उत्पन्न करना बताया है।

अभिप्रेरणा को प्रभावित करने वाले और भी कारक हैं, जो इस प्रकार हैं –

1. **संवेगात्मक स्थिति**–(Emotional state) विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिति भी उनकी अभिप्रेरणा–क्षमता को प्रभावित करती है। अतः कक्षा में अध्यापकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों के संवेगों को नियंत्रित रखें उनमें किसी कार्य के प्रति या ज्ञान के प्रति घृणा न पनपे।

2. **रुचि**–(Interest) प्रायः ऐसा देखा गया है कि जिस कार्य में विद्यार्थी रुचि दिखाता है, उसे वह जल्दी सीख लेता है और जो कार्य उसे अरुचिकर लगता है, उस कार्य को वह शीघ्र नहीं सीख पाता। अतः विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करने के लिये उनकी रुचि को अवश्य ध्यान रखना चाहिए।

3. **भय** (Fear) कई बार किसी प्रकार का भय अभिप्रेरणा को प्रभावित करता है, जैसे असफलता या हानि का भय इस प्रकार के भय के अधीन आकर विद्यार्थी अधिक कार्य करने के लिये अपनी पूरी क्षमता को न्यौछावर कर देते हैं।

4. **विद्यालय** (School) अभिप्रेरणा के लिए विद्यालयों की अलग–अलग भूमिका होती है विद्यालयों का शैक्षिक वातावरण विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। अतः विद्यालयों का शैक्षिक वातावरण इस प्रकार का हो कि विद्यार्थी कुछ सीखने के लिये स्वयं ही प्रेरित हो सकें।

5. **मूल्यांकन** (Evaluation) विद्यार्थियों के ज्ञान का मूल्यांकन भी अभिप्रेरणा की प्रक्रिया में सहायक होता है। विद्यार्थियों को उनके मूल्यांकन का परिणाम अवश्य बताना चाहिये ताकि वे अपनी–अपनी कार्य प्रणाली या सीखने के ढंग में आवश्यक सुधार करने के लिये अभिप्रेरित रहें।

समस्या का प्रादुर्भाव एवं औचित्य

किसी भी बालक के जीवन में सफलता का महत्वपूर्ण स्थान होता है। बालक अपनी शिक्षा किसी न किसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर ही प्राप्त करता है। कोई भी बालक मिलने वाली सफलता व असफलता को किस दृष्टि से स्वीकार करता है यह सब उसके द्वारा निर्धारित उपलब्धि प्रेरणा स्तर पर निर्भर करता है। एक ही कक्षा में पढ़ने वाले समान आयु वर्ग के बालक–बालिकाओं की उपलब्धि प्रेरणा स्तर में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है। बालक किसी भी लक्ष्य के लिए किए गये प्रथम प्रयास में ही अपनी उपलब्धि प्रेरणा स्तर का निर्धारण कर लेता है और उसके आधार पर वह अपनी उपलब्धि प्रेरणा स्तर में परिवर्तन लाता है। उपलब्धि प्रेरणा स्तर व्यक्ति के जीवन के निर्माण को प्रभावित करता है। बालक अपनी उपलब्धि प्रेरणा स्तर को अपनी सामाजिक आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर निर्धारित करता है। बालक की आकांक्षाओं में माता–पिता की आकांक्षाएं भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्रायः उच्च सामाजिक, आर्थिक परिवारों के बच्चे अवास्तविक उच्च स्तरीय आकांक्षाओं का निर्माण करते हैं। इसके विपरीत निम्न अथवा औसत सामाजिक स्तर के बालक भी ऊँची प्रेरणा सोचकर ऊँचा प्रेरणा स्तर निर्धारित करते हैं। इसकी झलक कक्षा में देखी जा सकती है। विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का सामाजिक, आर्थिक स्तर भिन्न–भिन्न होता है। बालक अपने सामाजिक–आर्थिक स्तर से बहुत ऊँचा आकांक्षा स्तर बना लेते हैं तथा कक्षा में उसके अनुसार ही उपलब्धियाँ प्राप्त करना चाहते हैं लेकिन उसके अनुरूप योग्यताओं के अभाव में जब वह असफलता प्राप्त करते हैं तो उससे उनका समायोजन प्रभावित होता है। अतः शिक्षा व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिससे बालक अपनी योग्यताओं व कौशलों के अनुरूप आकांक्षाओं का निर्धारण कर सके। उच्च माध्यमिक स्तर वह स्तर होता है जिसके अंत तक बालक अपनी उपलब्धि प्रेरणा को निर्धारित करते हैं तथा

उसी को ध्यान में रखकर वह शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तथा विषय का चयन करते हैं। अतः इस स्तर तक उसे अपनी योग्यताओं का ज्ञान होना अति आवश्यक है।

शिक्षा का प्रमुख कार्य बालक को सही दिशा प्रदान करना भी है जबकि विद्यालय में सही निर्देशन के अभाव में बालक अपनी स्थिति की सीमा से ऊपर उपलब्धि प्रेरणा स्तर बना लेता है जिससे अच्छी प्रतिष्ठा विकसित होने का अवसर प्राप्त नहीं होता। अतः ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा में अन्तर व समानता का विश्लेषण को शोधकर्ता ने अपने शोध विषय के रूप में चुना है। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्न शोध प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने का प्रयास किया गयाः

- ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा किस प्रकार से भिन्न है?
- शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं का उपलब्धि प्रेरणा स्तर किस प्रकार से भिन्न है?
- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा में अन्तर सहसंबंध में क्या भिन्नता है?

समस्या कथन

''ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा में अन्तर व समानता का विश्लेषण''

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

शहरी क्षेत्र–वे क्षेत्र जिनका जनसंख्या घनत्व उनके आसपास के क्षेत्रों की तुलना में अधिक और जहाँ मानवीय सुविधाओं की उपलब्धता प्रचुर मात्रा में होती है, शहरी क्षेत्र कहलाते हैं। एक शहरी क्षेत्र, शहर या कस्बा हो सकता है। नगरीय शब्द 'नगर' से बना है जिसका अर्थ शहर से सम्बन्धित है।

विलकावस के अनुसार, ''शहरी क्षेत्र के अन्तर्गत उन सभी क्षेत्रों को लिया जाता है, जिनमें जनसंख्या का घनत्व प्रति वर्ग मील एक हजार से अधिक हो और जहाँ वास्तव में कोई कृषि नहीं होती है।''

ग्रामीण क्षेत्र– ग्राम या गाँव छोटी–छोटी मानव बस्तियों को कहते हैं, जिनकी जनसंख्या कुछ सौ से लेकर कुछ हजार के बीच होती है। प्रायः गाँवों के लोग कृषि या कोई अन्य परम्परागत काम करते हैं। गाँवों में घर प्रायः पास–पास व अव्यवस्थित होते हैं परम्परागत रूप से गाँवों में शहरों की अपेक्षा कम सुविधाएँ होती हैं जैसे कि–शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य आदि।

मेरिल और एलरिज के अनुसार, ''ग्रामीण समुदाय के अन्तर्गत संस्थाओं और ऐसे व्यक्तियों का संकलन होता है, जो प्राकृतिक हितों में भाग लेते हैं।''

उपलब्धि प्रेरणा : एनास्टासी (1961) के अनुसार, ''शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त सफलता के स्तर का मूल्यांकन है जो विद्यार्थियों के शैक्षिक निर्देशों को समझने के प्रयास एवं उनके स्तर व आयु के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम के लक्ष्यों की प्राप्ति से अभिव्यक्त होता है जिसका परिणाम उनको वार्षिक परीक्षा में किए गए कार्यों से मिलता है।''

प्रेरणा से तात्पर्य विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया के प्रभाव का इस पर क्या प्रभाव पड़ता है। अभिप्रेरणा के मनोवैज्ञानिक अध्ययन की सीमा की ओर संकेत करते हुए **एलिस महोदय** ने कहा हैं कि ''हमारे अभिप्रेरणा के मनोविज्ञान ने अभी पर्याप्त प्रगति नही की है और इसीलिए हमारे अभिप्रेरणा परीक्षण अभी तक अधिकांश रूप में जाँच की कसौटी पर है।''

व्यक्तित्व शब्द बहुत जटिल एवं व्यापक है इसकी जटिलता को स्पष्ट करते हुए **वरनन महोदय** ने लिखा है कि ''मानव व्यक्तित्व के परीक्षण या मापन में इतनी अधिक कठिनाइयाँ है कि सर्वोच्च मनोवैज्ञानिक कुशलता का प्रयोग करके भी शीघ्र सफलता प्राप्त किये जाने की आशा की जा सकती है।''

शिक्षक वर्ग में अक्सर इस प्रश्न का सामना करते हैं– मैं छात्रों को वर्ग में कैसे अभिप्रेरित करूँ? स्वभावतः तब प्रश्न उठता है कि अभिप्रेरण है क्या? कुछ कहने के पहले यह बता देना अतिउत्तम होगा कि अभिप्रेरणा (Motivation) कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे शिक्षक जब चाहे तब बालकों में पैदा कर दे और जब चाहे तब उसे समाप्त कर दे। कहने का तात्पर्य यह है कि अभिप्रेरणा कोई ऐसी बाहरी चीज नहीं है जो शिक्षक की स्वेच्छा से उत्पन्न होता है या खत्म होता है। अभिप्रेरणा प्राणी की वह आंतरिक स्थिति अथवा तत्परता की स्थिति होती है जो उसे किसी विशिष्ट प्रकार के व्यवहार को प्रारंभ करने उसे कोई निश्चित दिशा देने तथा बनाए रखने के लिए प्रवृत्त करती है।

गिलफोर्ड.–अभिप्रेरणा एक विशेष आन्तरिक अवस्था हैं जो क्रियाको प्रारंभ करने अथवा निरन्तर बनाये रखने की प्रकृ ति रखती हैं। प्रेरणा मनोविज्ञान तथा शिक्षाशास्त्र में वह पद हैं तथा उन आन्तरिक अवस्थाओं के लिए प्रयोग में आता हैं। जो प्राणी कार्य करने के लिए शक्ति प्रदान करते हैं।

मन के शब्दों में प्रेरित शब्द का अर्थ हैं गतिवान होना अथवा क्रियान्वित होना। इस रूप में कोई भी शक्ति जो क्रिया को उत्पन्न करती हैं चाहें वह आन्तरिक हो या बाहरी अभिप्रेरणा कहलाती हैं।

हिलगार्ड तथा एटकिंसन प्रेरक से हमारा तात्पर्य उस वस्तु से हैं जो प्राणी को कार्य करने के लिए उत्तेजित करती हैं अथवा प्राणी के एक बार कार्य करने के लिए तैयार हो जाने के बाद क्रिया करने के लिए तथा उत्साहित करती हैं।

कार्यात्मक परिभाषा : वर्तमान अध्ययन में उपलब्धि प्रेरणा से अभिप्राय 10वीं कक्षा के विद्यार्थियों की सार्वजनिक परीक्षा में प्राप्त अंकों के कुल प्रतिशत से है।

अध्ययन के उद्देश्य

- ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा में अन्तर व समानता का अध्ययन करना।
- शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा में अन्तर व समानता का अध्ययन करना।
- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं के उपलब्धि प्रेरणा में अन्तर व समानता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा स्तर में अन्तर व समानता के सहसंबंध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

- ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा में अन्तर व समानता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा में अन्तर व समानता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं के उपलब्धि प्रेरणा में अन्तर व समानता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा स्तर में अन्तर व समानता के सहसंबंध में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता।

अध्ययन का परिसीमांकन

- प्रस्तुत शोध कार्य को कानपुर शहर के यू.पी. बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों तक ही सीमित रखा गया।
- प्रस्तुत शोध कार्य में उच्च माध्यमिक स्तर के 11वीं कक्षा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।
- प्रस्तुत शोध कार्य में कला, वाणिज्य एवं विज्ञान तीनों वर्गों के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।
- प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श स्वरूप 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

शोध समीक्षा

आसेरी, अनुराधा (2010) ने अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर शोध कर निकर्ष निकाला कि विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के स्तर को उच्च करने के लिए मनोवैज्ञानिक शिक्षा पाठ्यक्रम प्रभावशाली होते हैं। जो विद्यार्थी शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा रखते हैं उनके स्तर को छः माह तक मनोवैज्ञानिक शिक्षा पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण दिया जाकर उच्च किया गया। विद्यार्थियों में विद्यालयी विषयों के प्रदर्शन सुधार में मनोवैज्ञानिक शिक्षा पाठ्यक्रम प्रभावशाली होना पाया गया।

सिंह, डा0 अनिल कुमार (2017) ने ''विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर के नगरीय एवं ग्रामीण पुरूषों की बालिका–शिक्षा के प्रति अभिप्रेरणा'' में एक शोध पत्र प्रस्तुत किया है। आजमगढ़ जनपद के उच्च मध्यम व निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले ग्रामीण एवं नगरीय पुरूष अभिभावकों की बालिका शिक्षा के प्रति अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना। प्रस्तुत अध्ययन में आजमगढ़ जनपद के 300 पुरूष अभिभावकों का चयन किया गया है। जनपद के उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले ग्रामीण एवं नगरीय अभिभावकों का बालिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण मध्यम एवं निम्नतम श्रेणी के ग्रामीण एवं नगरीय पुरूष अभिभावकों की तुलना में अत्यधिक सकारात्मक है। शिक्षा के महत्व को उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अभिभावकों ने समझा है। इसलिए बालिका शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक है।

सिन्हा ,रश्मि (2019) ने अनुदानित एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन शीर्षक पर प्रयोजनात्मक शोध कार्य किया एवं निष्कर्ष में पाया कि अनुदानित एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। सामूहिक रूप से अनुदानित एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अनुदानित एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अनुदानित एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

त्रिपाठी, अमित (2021) ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभावः एक अध्ययन : भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका लखनऊ। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग, परिवेश व उपलब्धि अभिप्रेरणा के अन्तः क्रियात्मक प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में जौनपुर जनपद के इण्टरमीडिएट विद्यालयों के 100 छात्रों का चयन किया गया। इसमें तिवारी एचीवमेंट मोटिव स्केल (पी0सी0 तिवारी) व शैक्षिक उपलब्धि हेतु कक्षा 10 के माध्यमिक शिक्षा परिषद के प्राप्तांक को उपकरण के रूप में प्रयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्न थे– विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उपलब्धि प्रेरणा का प्रभाव ही अधिक पड़ता है। लिंग तथा परिवेश का प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर नहीं पाया गया।

अध्ययन की विधि

प्रस्तुत शोधकार्य में शोध समस्या की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुये वर्णनात्मक **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया। अध्ययन विधि या शोध विधि से तात्पर्य एक निश्चित व्यवस्था के आधार पर अध्ययन करने की प्रणाली से है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कह सकते हैं कि शोध विधि उस सारणी को सूचित करती है जिस पर चलकर सत्य की खोज या समस्या के कारणों का पता लगाया जा सके। आधुनिक युग में व्याप्त जटिलता का प्रभाव शिक्षा के क्षेत्रा पर भी पड़ा है जिससे

शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर अनेक समस्यायें उत्पन्न हो गयी हैं। इन समस्याओं के निदान के लिये इनके कारणों का विश्लेषण तथा सहसंबंध स्थापित करना भी अति आवश्यक है।

अध्ययन के चर

- **स्वतन्त्र चर–** उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी।
- **आश्रित चर–** उपलब्धि प्रेरणा

न्यादर्श का चयन

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में शोधार्थी द्वारा न्यादर्श में 11वीं कक्षा के कला, विज्ञान व वाणिज्य तीनों वर्गों के विद्यार्थियों को शामिल किया गया। प्रत्येक विद्यालय में से सरल यादृच्छिक विधि द्वारा 40–40 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिसमें 20 छात्र व 20 छात्रायें शामिल थी। इस प्रकार कुल 100 छात्र एवं 100 छात्राओं का चयन किया गया। अतः न्यादर्श के रूप में कुल 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

संस्था का चयन एवं न्यायोचितता

प्रस्तुत शोध कार्य के सन्दर्भ में शोधार्थी द्वारा उपरोक्त विद्यालयों में से **सोद्देश्य विधि** द्वारा पाँच उच्च माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है। इन विद्यालयों के चयन के निम्न कारण हैं–

- यह उच्च माध्यमिक स्तर के यू.पी. बोर्ड द्वारा संचालित विद्यालय है।
- इन विद्यालयों में छात्र एवं छात्रायें दोनों साथ–साथ पढ़ते है अर्थात् यह सहशिक्षा विद्यालय है।
- इनमें कला, विज्ञान व वाणिज्य तीनों वर्गों के विद्यार्थी है।
- इनमें छात्र एवं छात्राओं की संख्या हमारे उद्देश्य के अनुरूप समान अनुपात में है।
- इन विद्यालयों से प्रधानाचार्य द्वारा शोधार्थी को विद्यार्थियों का डाटा एकत्र करने की अनुमति मिल गई है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य में आंकड़ो को एकत्र करने के लिए **डॉ.टी.आर शर्मा** द्वारा निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। प्रश्नावली में 38प्रश्न है जो शैक्षिक, विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्थितियों, अनुभव, अध्यापन पर अधारित है। प्रश्नावली में प्रश्नों के उत्तर के लिए दो विकल्प दिए गए प्रथम उपलब्धि अभिप्रेरणा को दर्शाता है दूसरा उपलब्धि अभिप्रेरणा को नहीं दर्शाता है। दो विकल्पों मे किसी एक विकल्प का चुनाव विद्यार्थियो को करना है।

विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा के अध्ययन हेतु कक्षा दसवीं की बोर्ड परीक्षाओं के परीक्षाफल को आधार माना गया।

परिणाम एवं व्याख्या

यू.पी. बोर्ड के पाँच उच्च माध्यमिक विद्यालयों में से 100 छात्रों का चयन कर उनके कक्षा 10 के प्रतिशत प्राप्तांकों के आधार पर उनकी उपलब्धि प्रेरणा का मापन किया गया जिसके परिणाम को सारणी 1.1 में दर्शाया गया है:

सारणी–1.1 : उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा का अध्ययन

उपलब्धि प्रेरणा प्रतिशत	श्रेणी	कुल छात्र (100)		
		आवृत्ति	प्रतिशत	सरलीकृत आवृत्ति
90–99	अति उच्च	1	1	2
80–89	उच्च	5	5	13
70–79	औसत	33	75	26.66
60–69		42		31.33
50–59	निम्न	19	19	20.33
40–49	अति निम्न	0	0	6.33

सारणी–1.1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के 100 छात्रों के कक्षा 10 के प्रतिशत प्राप्तांकों के आधार पर उनकी उपलब्धि प्रेरणा से संबंधित प्रदत्तों को एकत्रित कर उन्हें पाँच श्रेणियों में इस प्रकार बाँटा गया है। 90–99 के मध्य प्रतिशत प्राप्त करने वाले छात्रों को अति उच्च श्रेणी में रखा गया है। 80–89 के मध्य प्रतिशत प्राप्त करने वाले छात्रों को उच्च श्रेणी में रखा गया है। 60–79 के मध्य प्रतिशत प्राप्त करने वाले छात्रों को औसत श्रेणी में रखा गया है। 50–59 के मध्य प्रतिशत प्राप्त करने वाले छात्रों को निम्न श्रेणी में रखा गया है तथा 40–49 के मध्य प्रतिशत प्राप्त करने वाले छात्रों को अति निम्न श्रेणी में रखा गया है। इस प्रकार एकत्रित प्रदत्तों को सुव्यवस्थित रूप से वर्गीकृत करके आवृत्ति वितरण किया गया है। इन आवृत्ति वितरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा में अन्तर पाये जाने का कारण उनकी आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक स्थिति, कक्षा में उपस्थिति एवं उनकी बुद्धिलब्धि हो सकते हैं।

सारणी 1.2 : उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा के प्राप्तांकों का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन का विवरण

कुल छात्र	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
100	67.32	8.18

सारणी–1.2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के 100 छात्रों का मध्यमान 67.32 तथा प्रमाणिक विचलन 8.18 प्राप्त हुआ। इस प्रकार जो मध्यमान निकल कर आया वह छात्रों के कक्षा 10वीं के प्रतिशत प्राप्तांकों में उच्चतम प्राप्तांक जो कि 90 है एवं निम्नतम प्राप्तांक जो कि 50 है तथा इन दोनों प्राप्तांकों का औसत जो कि 70 है से कम में आता है। इस प्रकार यह मध्यमान औसत से कम की श्रेणी में आता है।

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा का अध्ययन

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थिनी द्वारा यू.पी. बोर्ड के पाँच उच्च माध्यमिक विद्यालयों में से 100 छात्राओं का चयन कर उनके कक्षा 10 के प्रतिशत प्राप्तांकों के आधार पर उनकी उपलब्धि प्रेरणा का मापन किया गया जिसके परिणाम को सारणी 1.3 में दर्शाया गया है।

सारणी–1.3 : उच्च माध्यमिक स्तर के छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा का अध्ययन

उपलब्धि प्रेरणा प्रतिशत	श्रेणी	कुल छात्र (100)		
		आवृत्ति	प्रतिशत	सरलीकृत आवृत्ति
90–99	अति उच्च	2	2	6.66
80–89	उच्च	18	18	24.66
70–79	औसत	54	78	32
60–69		24		26.66
50–59	निम्न	2	2	8.66
40–49	अति निम्न	0	0	0.66

सारणी–1.3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के 100 छात्राओं के कक्षा 10 के प्रतिशत प्राप्तांकों के आधार पर उनकी उपलब्धि प्रेरणा से संबंधित प्रदत्तों को एकत्रित कर उन्हें पाँच श्रेणियों में इस प्रकार बाँटा गया है। 90–99 के मध्य प्रतिशत प्राप्त करने वाली छात्राओं को अति उच्च श्रेणी में रखा गया है। 80–89 के मध्य

प्रतिशत प्राप्त करने वाली छात्राओं को उच्च श्रेणी में रखा गया है। 60–79 के मध्य प्रतिशत प्राप्त करने करने वाली छात्राओं को औसत श्रेणी में रखा गया है। 50–59 के मध्य प्रतिशत प्राप्त करने वाली छात्राओं को निम्न श्रेणी में रखा गया है तथा 40–49 के मध्य प्रतिशत प्राप्त करने वाली छात्राओं को अति निम्न श्रेणी में रखा गया है। इस प्रकार एकत्रित प्रदत्तों को सुव्यवस्थित रूप से वर्गीकृत करके आवृत्ति वितरण किया गया है। इन आवृत्ति वितरण के आधार पर कहा जा सकता है कि छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा में अन्तर पाये जाने का कारण उनकी आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक स्थिति, कक्षा में उपस्थिति एवं उनकी बुद्धिलब्धि हो सकते है।

सारणी–1.4 : उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा के प्राप्तांकों का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन का वितरण

कुल छात्र	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
100	74.14	7.53

सारणी–1.4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के 100 छात्राओं का मध्यमान 74.14 तथा प्रमाणिक विचलन 7.53 प्राप्त हुआ। इस प्रकार जो मध्यमान निकलकर आया वह छात्राओं के कक्षा 10वीं के प्रतिशत प्राप्तांकों में उच्चतम प्राप्तांक जो कि 91 है एवं निम्नतम प्राप्तांक जो कि 58 है तथा इन दोनों प्राप्तांकों का औसत जो कि 74.5 है के बीच में आता है। इस प्रकार यह मध्यमान औसत की श्रेणी में आता है।

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थिनी द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा के परिणामों के तुलनात्मक अध्ययन को सारणी–1.5 में दर्शाया गया है।

सारणी–1.5: उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा का तुलनात्मक विवरण

उपलब्धि प्रेरणा प्रतिशत	श्रेणी	कुल छात्र (100)			कुल छात्राएं (100)		
		आवृत्ति	प्रतिशत	सरलीकृत आवृत्ति	आवृत्ति	प्रतिशत	सरलीकृत आवृत्ति
90–99	अति उच्च	1	1	2	2	2	6.66
80–89	उच्च	5	5	13	18	18	24.66
70–79	औसत	33	75	26.66	54	78	32
60–69		42		31.33	24		26.66
50–59	निम्न	19	19	20.33	2	2	8.66
40–49	अति निम्न	0	0	6.33	0	0	0.66

सारणी–1.5 : उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा का तुलनात्मक विवरण

उपरोक्त सारणी–1.5 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के 90–99 के मध्य प्रतिशत प्राप्त करने वाले अति उच्च श्रेणी के छात्रों का प्रतिशत 1 है जबकि छात्राओं का प्रतिशत 2 है। 80–89 के मध्य प्रतिशत प्राप्त करने वाले उच्च श्रेणी के छात्रों का प्रतिशत 5 है जबकि छात्राओं का प्रतिशत 18 है। 60–79 के मध्य प्रतिशत प्राप्त करने वाले औसत श्रेणी के छात्रों का प्रतिशत 75 है जबकि छात्राओं का प्रतिशत 78 है। 50–59 के मध्य प्रतिशत प्राप्त करने वाले निम्न श्रेणी के छात्रों का प्रतिशत 19 है जबकि छात्राओं का प्रतिशत 2 है तथा 40–49 के मध्य प्रतिशत प्राप्त

करने वाले अति निम्न श्रेणी के छात्र एवं छात्राओं का प्रतिशत 0 है। उपरोक्त सारणी 4.5 के निष्कर्ष के आधार पर यह नहीं कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरण में अन्तर पाया जाता है या नहीं। यह जानने के लिए हमें मध्यमान व प्रमाणिक विचलन एवं इन दोनों के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना करनी होगी।

सारणी–1.6 : उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, क्रान्तिक अनुपात व सार्थकता स्तर का विवरण

कुल विद्यार्थी (200)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्र	67.32	8.18	6.13	>.01	सार्थक
छात्राएं	74.14	7.53			

सारणी–1.6 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा का मध्यमान क्रमशः 67.32 तथा 74.14 एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 8.18 तथा 7.53 प्राप्त हुआ। छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरण के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई जिसका मान 6.13 प्राप्त हुआ जो कि .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा में सार्थक अन्तर पाया जाता है। इन अन्तर के पाये जाने का कारण उनकी पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति, रूचि, बुद्धिलब्धि, कक्षा में उपस्थिति, माता पिता का प्रोत्साहन एवं व्यक्तिगत भिन्नतायें हो सकते हैं। छात्रों की तुलना में छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा अधिक होती है क्योंकि छात्राएं छात्रों की तुलना में पढ़ने में अधिक रुचि लेती हैं। अतः इससे संबंधित शून्य परिकल्पना 'उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा में कोई अन्तर नहीं पाया जाता अस्वीकृत होती है।

शोध अध्ययन की उपलब्धियाँ

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा का अध्ययन

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधकर्ता द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों को उनकी उपलब्धि प्रेरणा के आधार पर 5 श्रेणियों, अति उच्च, उच्च, औसत, निम्न तथा अति निम्न में विभाजित किया गया। अति उच्च श्रेणी में 1 प्रतिशत छात्र, उच्च श्रेणी में 5 प्रतिशत छात्र, औसत श्रेणी में 75 प्रतिशत छात्रा, निम्न श्रेणी में 19 प्रतिशत छात्र तथा अति निम्न श्रेणी में 0 प्रतिशत छात्र प्राप्त हुए। इन छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा में अन्तर के पाये जाने का कारण उनकी आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक स्थिति, व्यक्तिगत भिन्नताएँ आदि हो सकते हैं। उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा से संबंधित मध्यमान 67.32 प्राप्त हुआ जो यह स्पष्ट करता है कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि औसत से कम है तथा प्रमाणिक विचलन 8.18 प्राप्त हुआ।

उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा का अध्ययन

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधकर्ता द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं को उनकी उपलब्धि प्रेरणा के आधार पर 5 श्रेणियों अति उच्च, उच्च, औसत, निम्न तथा अति निम्न में विभाजित किया गया। अति उच्च श्रेणी में 2 प्रतिशत छात्राएं, उच्च श्रेणी में 18 प्रतिश छात्रायें, औसत श्रेणी में 78 प्रतिशत छात्रायें, निम्न श्रेणी में 2 प्रतिशत छात्रायें तथा अति

©The Research Dialogue | Received: 01 April 2026 | Accepted: 05 April 2026 | Published: 15 April 2026

निम्न श्रेणी में 0 प्रतिशत छात्रायें प्राप्त हुईं। इन छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर के पाये जाने का कारण उनकी आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक स्थिति, व्यक्तिगत भिन्नताएँ आदि

हो सकते हैं। उच्च माध्यमिक स्तर के छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा से संबंधित मध्यमान 74.14 प्राप्त हुआ जो यह स्पष्ट करता है कि छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि औसत है तथा प्रमाणिक विचलन 7.53 प्राप्त हुआ।

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रा–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधकर्ता द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रा–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा का मध्यमान क्रमशः 67.32 तथा 74.14 एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 8.18 तथा 7.53 प्राप्त हुआ। दोनों छात्रा–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई जिसका मान 6.13 प्राप्त हुआ है जो कि .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रा–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा में सार्थक अन्तर पाया जाता है। इन अन्तर के पाये जाने का कारण उनकी बुद्धिलब्धि, रुचि, कक्षा में उपस्थिति, माता–पिता का प्रोत्साहन आदि हो सकते हैं। अतः इससे संबंधित शून्य परिकल्पना 'उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रा–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं पाया जाता' अस्वीकृत होती है।

शोध अध्ययन द्वारा प्राप्त निष्कर्ष

परीक्षण से प्राप्त सम्पूर्ण प्रदत्तों के विश्लेषण एवं व्याख्या के उपरान्त उपलब्धि के आधार पर निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि–

1. सम्पूर्ण प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा में अन्तर पाया गया। इन अन्तर के पाये जाने का कारण उनकी आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक स्थिति, व्यक्तिगत भिन्नताएँ आदि हो सकते हैं।
2. उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा में अन्तर पाया गया। इन अन्तर के पाये जाने का कारण उनकी आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक स्थिति, व्यक्तिगत भिन्नताएँ आदि हो सकते हैं।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रा–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा में .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया। छात्राओं का शैक्षिक स्तर छात्रों से उत्तम पाया गया। इन अन्तर के पाये जाने का कारण उनकी रूचि, कक्षा में उपस्थिति, माता–पिता का प्रोत्साहन आदि हो सकते हैं।
4. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा स्तर में .01 सार्थकता स्तर पर निम्न धनात्मक सहसंबंध पाया गया।
5. उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा स्तर में .05 सार्थकता स्तर पर अति निम्न ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया।
6. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा स्तर में .01 सार्थकता स्तर पर सहसंबंध नहीं पाया गया।

शोध अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ

किसी भी शोध अध्ययन की सार्थकता उनकी उपादेयता पर आश्रित होती है। इसके अभाव में अनुसंधान पूर्णतः महत्वहीन प्रतीत होता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर प्राप्त उपलब्धियाँ व उनसे निकाले गये निष्कर्ष निम्नलिखित दृष्टि से महत्वपूर्ण है–

1 शिक्षक इस बात की जानकारी देने में सहायक होंगे कि वह छात्रों को उनकी क्षमताओं, योग्यताओं को पहचानने हेतु उपयुक्त अवसर प्रदान करें जिससे वे अपनी क्षमताओं के अनुरूप अपने लिए उचित लक्ष्य का निर्माण कर सके।

2 विद्यार्थियों को आगे बढ़ाने के लिऐ उन्हें उचित मार्ग निर्देशन दिया जा सकता है।

3. विद्यालय में अच्छा वातावरण उपलब्ध कराया जा सकता है जिससे विद्यार्थी अपनी उपलब्धि प्रेरणा स्तर को प्राप्त करने में सक्षम हो सकें।

4. विद्यालय में विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा स्तर को बढ़ाने के लिए नवीनतम ज्ञान प्रदान करने की व्यवस्था की जा सकती है।

5. विद्यालय में सभी विषयों को महत्व दिया जाए जिससे उनका अध्ययन करके वह अपनी उपलब्धि प्रेरणा स्तर का मूल्यांकन कर सके।

संदर्भ

- गिलफोर्ड, जे.पी. (1956). ''फन्डामेन्टल स्टैटिसटिक्स इन साइकोलॉजी एण्ड एजुकेशन'', मैक्ग्रा हिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क।
- ड्रेवर, जेम्स (1956). ''ए डिक्सनरी ऑफ साइक्लोजी न्यूयार्क'' पेन्जन बुक्स लि. मिडिलसेक्स।
- एनास्टासी, एन. (1961). ''मनोवैज्ञानिक परीक्षण'', दि मेकमिलन एण्ड कम्पनी, न्यूयार्क।
- बेस्ट, जॉन. डब्ल्यू. (1963). ''रिसर्च इन एजुकेशन'', प्रिन्टिस हॉल ऑफ इण्डिया प्रा.लि. नई दिल्ली।
- बुच, एम.बी. (1974). ''ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन'', केस एम.एस. यूनिवर्सिटी, बड़ौदा।
- नुनैली, जे.सी. (1975). ''इन्ट्रोडक्शन टू स्टैटिसटिक्स फॉर साइकोलॉजी एण्ड एजुकेशन'', मैक्ग्रा हिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क।
- कॉल, लोकेश (1984). ''मैथोडोलॉजी ऑफ एजुकेशनल रिसर्च'', विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि., नई दिल्ली।
- शर्मा, आर.ए. (1985). ''फन्डामेन्टल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एण्ड स्टैटिसटिक्स'', आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
- कोठारी, सी.आर. (1985). ''रिसर्च मैथोडोलॉजी मैथर्ड एण्ड टैक्निक्स'', विले इस्टर्न लि. मुम्बई।
- गैरिट, हेनरी ई. (1986). ''स्टैटिसटिक्स इन साइकोलॉजी एण्ड एजुकेशन'', लीगमेन्स ग्रीन एण्ड कम्पनी, न्यूयार्क।
- बाला, निधि (2000). ''माता के व्यवसाय व पारिवारिक आय का बच्चों की उपलब्धि प्रेरणा के संबंध का अध्ययन'', एम.ए. श्रीवास्तव (सम्पादक) भारतीय शिक्षा शोध पत्रिाका, लखनऊ–इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ एजुकेशनल रिसर्च वर्ष 19, अंक 2, 2000।
- नलिनी, देवी के. (2001). ''पूर्व किशोरावस्था के किशोरों की अध्ययन आदतों एवं उपलब्धि प्रेरणा का अध्ययन'', रिसर्च जर्नल ऑफ अविनाशीलिंगम इन्स्टीट्यूट, वॉल्यूम 11(3), पृ.सं. 179।
- मार्गरेट (2002). ''पेरेन्टल इनवॉलमेन्ट ऑफ अकेडमिक अचीवमेन्ट'', अनपब्लिश्ड पी.एच.डी. थीसिस इन एजुकेशन नार्थ कोरियन स्टेट यूनिवर्सिटी, सन्दर्भित इन डेजरटेशन एब्स्ट्रेक्ट इन्टरनेशनल दि ह्यूमनिस्टक एण्ड सोशल साइन्स 61(6), 2002।
- सिंह, कल्पना (2002). ''माध्यमिक स्तर के छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन पर अध्ययन आदतों के प्रभाव का अध्ययन'', अनपब्लिश्ड एम.एड. डिजरटेशन, शिक्षा संकाय, डी.ई.आई. डीम्ड यूनिवर्सिटी, दयालबाग, आगरा।
- कपिल, एच.के. (2003). ''एलीमेन्ट्स ऑफ स्टैटिसटिक्स इन सोशल साइंस'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

- स्लायवा एण्ड मेल हुईन्स (2004). ''रिलेशनशिप विटवीन लेबिल ऑफ एसपीरेशन परफोरमेन्स, पास्ट परफोरमेन्स एण्ड फ्यूचर परफोरमेन्स'', साइकोलोजिकल एब्सट्रेक्ट, 93(6)।
- पाल, देवेन (2005). ''उच्च माध्यमिक कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं विद्यालयी उपलब्धि के संबंध में अध्ययन'', भारतीय शोध पत्रिका, वर्ष 25, अंक 4, लखनऊ।
- दीक्षित, शालिनी (2006). ''गृह पर्यावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन'', अनपब्लिश्ड एम. एड. डिजरटेशन, शिक्षा संकाय, डी.ई.आई. डीम्ड यूनिवर्सिटी, दयालबाग, आगरा।
- ए, जैनिक (2006). ''महाविद्यालयी वातावरण के दायरे में उपलब्धि और प्रेरणा पर सामाजिक पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन'', इण्टरनेशनल डिजर्टेशन एब्सट्रैक्ट, वॉल्यूम 67, अंक 08।
- हिट्ज, डब्ल्यू.एच. (2006). ''द इफैक्ट ऑफ टीचिंग मैथडोलॉजी ऑन स्टूडेंट्स अचीवमेन्ट इन मैथमैटिक्स'', जर्नल ऑफ स्पेशल एजुकेशन वॉल्यूम 26, पृ0सं0 125–138।
- अग्रवाल, सरस्वती (2010). ''विद्यार्थियों की कक्षा में उपस्थिति तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन'', एस.एस. श्रीवास्तव (सम्पादक) भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, लखनऊ– इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ एजुकेशनल रिसर्च वर्ष 19, अंक 1, 2010।
- जैन, नविता (2010). ''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा पर माता–पिता के प्रोत्साहन के प्रभाव का अध्ययन'', अनपब्लिश्ड एम.एड. डिजरटेशन, शिक्षा संकाय, डीई.आई. डीम्ड यूनिवर्सिटी, दयालबाग, आगरा।

Cite this Article:

अमिता शर्मा एवं प्रो स्वीटी श्रीवास्तव, "ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के छात्र-छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा में अन्तर व समानता का विश्लेषण" The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, Pp-337–350, Volume-05, Issue-01, April-2026, https://theresearchdialogue.com/

This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

अमिता शर्मा एवं प्रो०स्वीटी श्रीवास्तव

For publication of Research Paper title

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा में अन्तर व समानता का विश्लेषण

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-01, Month April, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i1.41